आंतर - भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

''आंतर भारती'' स्वप्नद्रष्टा
साने गुरुजी

संस्थाध्यक्ष
ॲड.आनंदमोहन माथुर

प्रेरक, संवर्द्धक-संपादक
स्व.यदुनाथ थत्ते

प्रबंध संपादन कार्यालय
आंतर भारती
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहाजानी - 413 522 (महा.)
ईमेल- antarbharati.patrika@gmail.com

संपादन कार्यालय
द्वारा, डॉ.सी.जय शंकर बाबु
सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, पांडीचेरी - विश्वविद्यालय, कालापेट, पुदुच्चेरी - 605014
ईमेल- editorbabuji@gmail.com

आंतर भारती, साने गुरुजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति की सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है.

मुख्य संपादक
प्राचार्य सदाविजय आर्य
09823156777

visit us : antarbharati.org.in

कार्यकारी संपादक
डॉ.सी.जयशंकर बाबु
09843508506

संपादक
गंगाधर घुमाडे • ज्योतिराव लढ़के

मार्गदर्शक
एस.एन.सुब्बाराव • मुकुंद कुलकर्णी • मुरलीधर शहा

सहयोगी
मधुश्री आर्य •गोपाल सत्पुरे
चित्र : सदाविजय आर्य

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक / संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the Potentiality, Skill, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती (मासिक) पत्रिका मुद्रक, प्रकाशक सदाविजय आर्य द्वारा साईराम ग्राफीक्स, लातूर से गणेश ऑफ्सेट, उदगीर हेतु मुद्रित कर आंतर भारती संकुल, औराद शहाजानी से प्रकाशित.

इस अंक में...

संपादकीय -	आंतर भारती का स्वर्ण जयंती वर्ष	५
आंतर भारती - १	तुका म्हणे	७
समाचार भारती-१		८
आंतर भारती - २	बसव वचन	९
आंतर भारती - ३	तिरुवल्लुवर वाणी	१०
काव्य भारती - १	पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल	११
काव्य भारती - २	त्योहार	१२
कथा भारती - १	संघर्ष और सफलता की गाथा-बराक ओबामा	१३
विशेष आलेख - १	इथोपिया : मानव सुनामी का कहर	१५
विशेष आलेख - २	रतनगढ़ हादसा : ईश्वर की ग्लानि	१८
विशेष आलेख - ३	मृत्युदंड : आंधी से उखड़ती दूब	२२
विशेष आलेख - ४	कोमलता से ही बचेगी सभ्यता	२६
समाचार भारती-२		२८
श्रद्धांजलि -	डॉक्टर साहब की विरासत को चलाएँगे !	२९
समाचार भारती-३	अंबाजोगाई, में आन्तर भारती की शाखा स्थापित	३१
समाचार भारती-४	संयुक्त राष्ट्र संघ : सामाजिक विकास	
	आयोग सम्मेलन	३२

संपादकीय...

आंतर भारती का स्वर्ण जयंती वर्ष

साने गुरुजी की सद्संकल्पनाओं के साकार रूप लेने वाले अनुष्ठान के रूप में आंतर भारती अपनी स्वर्ण जयंती के वर्ष में प्रवेश कर रही है. एकात्म भारत के पुनर्निर्माण के युवा अभियान के सशक्त अखिल भारतीय अभिव्यक्ति मंच के रूप में इस पत्रिका ने विगत पांच दशकों से जो विशिष्ट भूमिका अदा की है, उसे आंतर भारती के असंख्य पाठक व आंतर भारती संस्था के सभी निष्ठावान कार्यकत्तो सुपरिचित हैं. आंतर भारती के स्वप्नद्रष्टा साने गुरुजी असीम युवा शक्ति की सृजनात्मक उपयोगिता हेतु पक्षधर थे. उनकी संकल्पनाओं के अनुरूप युवाओं की संभाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करते हुए यह अनुष्ठान निष्ठापूर्वक पांच दशक पूरे करने का यह सुअवसर एक ओर हर्ष व आनंद का समय है, वहीं दूसरी ओर अपनी उद्देश्य की प्राप्ति में गति व प्रगति के पुनर्विलोकन का भी समय है.

आंतर भारती के अपने नियमित प्रकाशन के ४९ वें वर्ष का यह प्रथम पुष्प है और इसके साथ इसके स्वर्ण जयंती वर्ष की यात्रा शुरू हो रही है. किसी पत्रिका का ५० वर्ष तक नियमित प्रकाशन अपने आपमें एक बड़ी उपलब्धि है. इस पांच दशकों की यात्रा के समाहार के रूप आंतर भारती का एक बृहद् विशेषांक प्रकाशित हो जो इस ऐतिहासिक पड़ाव का मील का पत्थर साबित हो. इसके लिए आंतर भारती के प्रबुद्ध पाठकों-लेखकों, निष्ठावान् कार्यकर्त्ताओं के आत्मीय सहयोग की जरूरत है. विशेषांक के अभिकल्प को निर्धारित करने व इस अभियान को सफल बनाने में प्रत्येक पाठक, लेखक व आंतर भारती से जुड़े प्रत्येक कार्यकर्त्ता, हितैषी, बच्चे, बड़े व बूढ़े सभी के परामर्श का हार्दिक स्वागत है. जनवरी, २०१४ के दौरान प्राप्त तमाम सुझावों, परामर्शों, आश्वासनों के अनुरूप विशेषांक की रूपरेखा की घोषणा आंतर भारती मार्च, २०१३ अंक में की जाएगी, तदनुसार कार्य-योजना बनाकर जनवरी, २०१५ के अंक को बृहद विशेषांक के रूप में स्वर्ण जमंती अंक का सफल प्रकाशन हो यह संकल्पना की गई है. १० मई, २०१३ को गोवा में संपन्न आंतर भारती की आम सभा व विश्वस्त परिषद के बैठक में लिए गए निर्णय के कार्यान्वयन में सबके

सहयोग का एतद्वारा हार्दिक निमंत्रण है.

आंतर भारती का यह स्वर्ण जयंती वर्ष कई दृष्टियों से सार्थक हो, इसके लिए कई और कार्य-योजनाएँ शुरू करने की जरूरत है. इसमें भी सभी का आत्मीय व निष्ठापूर्ण सहयोग अपेक्षित है. साने गुरुजी की शताधिक कृतियाँ मराठी में प्रकाशित हुई हैं, इनमें कुछ महत्पपूर्ण कृतियों का अनुवाद हिंदी व अंग्रेजी में भी हुए हैं. इन कृतियों का सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद से इस अभियान की पहुँच बढ़ने में मददगार हो सकती है साथ ही साने गुरुजी की सद्विचारों से वाकिफ़ होने का अवसर भिन्न भाषा-भाषिमों को सुलभ हो सकता है. विभिन्न भाषाओं पर अधिकार रखनेवाले बंधुओं से सविनय अनुरोध है कि वे साने गुरुजी की कृतियों का स्वयं अनुवाद करें व अन्म मित्रों से अनुवाद करवाएं जो इस कार्म में सक्षम हैं. इस आह्वान को ध्यान में रखकर अनुवाद सेवा करने के लिए उत्सुक बंधुओं से अनुरोध है कि वे अपनी रुचि की अभिव्यक्ति एक पोस्ट कार्ड द्वारा आंतर भारती कार्यालय को अथवा ई-मेल द्वारा (antarbharati.patrika@gmail.com, professorbabuji@gmail.com) अपनी स्वीकृति व कृति व अनुवाद की भाषा की जानकारी दे सकते हैं, जिससे सभी कृतियों का शीघ्र अनुवाद सुनिश्चित हो सके. अनुवादकों के मार्गदर्शन हेतु मार्च, २०१३ के अंक में साने गुरुजी की कृतियों की समग्र जानकारी भी प्रस्तुत की जाएगी.

स्वर्ण जयंती वर्ष में इस अभियान के सार्थक अस्मिता के लिए हर गाँव व शहर में आंतर भारती पाठक मंच की स्थापना एक सार्थक पहल हो सकती है. इसके संयोजन में उत्सुक कार्यकर्ता अपनी स्वीकृति आंतर भारती कार्यालय को सूचित करें. आंतर भारती पाठक मंच के सदस्यों को निःशुल्क आंतर भारती की ई-प्रति भेजी जाएगी. वैसे ई-प्रति www.antarbharati.org.in वेबसाइट पर पढ़ने की सुविधा आरंभ भी हो चुकी है. स्वर्ण जयंती वर्ष में आंतर भारती के तमाम प्रयासों की अद्यतन सूचनाएँ पाठकों को पत्रिका के अंकों व वेबसाइट के माध्यम उपलब्ध होती रहेंगी. आंतर भारती की जन-जन की हृदय की वाणी बने... इसी संकल्पना व शुभकामनाओं सहित..

२०१४ नव वर्ष, संक्रांति पर्व, गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

डॉ. सी. जम शंकर बाबु

आंतर भारती - १

तुकाम्हणे

(मराठी)

निर्वाहापुरतें अन्न आच्छादन

निर्वाहापुरते अन्न आच्छादन । आश्रमासी स्थान कोपीं गुहा ।।ध्रु।।
कोठें ही चित्तासी नसावें बंधन । हृदयीं नारायण सांटवावा ।।१।।
नये बोलों फार बैसों जनामधीं । सावधान बुद्धी इंद्रियें दमी ।।२।।
तुका म्हणे घडी घडीनें साधावी । त्रिगुणांची गोवी उगवूनि ।।३।।

हिन्दी भावानुवाद :

'शांति यदि पाना चाहो तो...'

जीवन हेतु जरूरी जितना, अन्न वस्त्र बस होवे उतना ।
किसी गुहा में या कुटिया में, आश्रम हो एकांत विजन में ।।१।।
चित्त बँधा ना होय किसी से, बंध कोई ना बाँध सके उसे ।
बसा चित्त में हो नारायण, अन्य किसी का ध्यान, न चिंतन ।।२।।
कम बोलना, मौन ही रहना, सभा, मंडली में न बैठना ।
सावधान रखकर बुद्धि को, वश में करना इंद्रियगण को ।।३।।
तुका कहे यह रीति अपनाकर, घडी-घडी हरि नाम स्मरण कर ।
सुलझेगी गुत्थी त्रिगुणों की, मिल जायेगी ठावँ शान्ति की ।।४।।

हिन्दी : प्राचार्य वेदकुमार वेदालंकार
परिमल २८/८१, विद्यानगर, उस्मानाबाद (महा.).

<u>English Translation</u>

Let there be just enough food and clothing

Nirvaahapurte anna achchaadana

Let there be just enough food and clothing.
Let there be no sense of bondage in the mind.
Cherish the Name of the Lord in your heart !

Avoid gossip while in company.
Rein in the senses, the mind and the intellect.
Says TUKA, carry on the pursuit of devotion, without a break,
Without getting enatangled in the trammels of
Tams[1], Rajas[2], and Satwik[3].

1.2.3. - Tamas, Rajas, Satwik - Characteristics of a person with reference to the attributes-slothful, passionate and pure respectively.

English : D.S.VAJRAM
3, Praram, Lakaki Rasta, Pune - 411016

समाचार भारती -१

दि. २४ दिसम्बर २०१३ को किनवट जि.नांदेड (महा.) में साने गुरुजी रुग्णालय की ओर से अंधश्रद्धा निर्मूलन युवा शिविर हुआ जिसमें अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के राज्यसचिव श्री माधव बावगे व प्राचार्या सविता शेटये ने प्रबोधक भाषण देकर युवा को प्रेरणा दी.

बसव वचन

मूल कन्नड वचन -

यन्नवरेन गोलिदु होन्न शूलदलिक्किदरय्या
अहंकार पूराय घायदळ्ळि
आनेंतु बदुकुवे ? आनेंतु जीवसुवेनय्य ?
जंगमवागि बंदु, जरिदु शूलव निळुहि
प्रसादद मद्दनिक्कि सलहो कूडल संगमदेव.

हिंदी काव्यानुवाद :-

अपनों ने मुझे स्तुति रूपी सोने के शूल पर चढ़ाया
अहंकार कचरा कुण्ड में मैं कैसे जिंदा रहूँ ?
मैं कैसे जीवन बिताऊं ? जंगमरूप में आकर
शूल से उतार प्रसाद रूप औषध देकर रक्षण करो कूडल संगम देव.

भाष्य -

महात्मा बसवेश्वर प्रशंसा से, स्तुति से कतराते हैं. डरते हैं. अहं भाव से दूर रहना चाहते हैं लेकिन उनके अपने जो हैं वे उनकी बड़ाई करते हैं. वह उन्हें सोने के शूल-सी लगती है. जिससे अहं का पोषण होता है, अहंकार मनुष्य को पतन की ओर ले जाता है. अहंकार के घास-फूसके खेत में मेरा दम घुट रहा है. ऐसी स्थिति में मैं कैसे जी रहा हूँ, जीवन यापन कर रहा हूँ मैं जानता हूँ. मुझे इस दुर्गत से उबारिए. प्रसाद रूप औषधि देकर मेरा उद्धार कीजिए.

वचन का सार यह है कि मनुष्य को अहंकार से दूर रहना चाहिए. अहंकार रुपी घासफूस को जड़ समेत उखाड़कर फेंक देना चाहिए. जो व्यक्तित्व के विकास में बाधक है.

- डॉ.इरेश सदाशिव स्वामी
- 'विद्या', १२, ब्रह्मचैतन्य नगर, बिजापूर रस्ता, सोलापुर - ४१३००४
०२१७-२३४२१९४, ०९३७१०९९५००

तिरुवल्लुवर वाणी

तिरुक्कुरल

तमिलमूल - संत तिरुवल्लुवर
देवनागरी लिप्यांतरण एवं हिंदी हाइकु
अनुवाद - डॉ.सी.जय शंकर बाबु

प्रथम खंड - अरत्तुपाल (धर्म खंड)
इल्ल़रवियल् (गृहस्थ-धर्म)
अध्याय ५. इल्वाळ्क्कै (गृहस्थ-जीवन)

अन्बुम् अऱनुम् उडैत्तायिन् इल्वाळ्क्कै
पण्बुम् पयनुम् अदु । (कुरल - ४५)

प्रेमपूर्ण व
धर्ममय गृहस्थी
पावे सुफल ।

भावार्थ - प्रेममय, धर्म-मार्गी गृहस्थी जीवन धन्य है, वह सुफल का अधिकारी है ।

अऱत्ताट्रिन् इल्वाळ्क्कै याट्रिन् पुरत्ताट्रिर्
पोओय्पुप् पेरुवदु एवन् । (कुरल - ४६)

धर्म-निष्ठा हो
गृहस्थी में, तो अन्य
आश्रम ही क्यों ?

भावार्थ - निष्ठापूर्वक गृहस्थ जीवन-धर्म निभाने वाले व्यक्ति को अन्य आश्रम-धर्मों के पालन की जरूरत नहीं है ।

काव्य भारती - १

धारावाहिक - २४

पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल

- टी.ई.एस.राघवन

मुंबई

द्वीप सात-युत यह रहा लखने में लघु धान ।
नभचुंबी भवन है अब तो विराजमान ॥
मुंबादेवी की वजह, मुंबई थी कहलाय ।
''मुंबई'' से निर्गत निनद बाँबे ही बन जाय ॥
धीरे धीरे शहर की आबादी अधिकाय ।
यातायात के साधन प्रतिदिन बढ़ते जाय ॥
बैल शकट के स्थान पर रेल, कार, आसन्न ।
ट्रामकार, विमान तथा अन्य यान आसन्न ॥
अस्पताल खोले गये, तथा कोर्ट टकसाल ।
विद्यालय विश्व का स्थापित अगला साल ॥
आय मिलें सरकार को बंदरगाह निमित्त ।
राजस्थ मिलें राज को यातायात निमित्त ॥
प्रायवेट उद्योग से होता नगरविकास ।
वस्त्र-सिनेमा ट्रेड से होता शहर विकास ॥
तेल-रसायन-रबड का उत्पादक यह केन्द्र ।
दवा-यंत्र-औजार का निर्माता यह केन्द्र ॥
सिनेमाघर, निशिघर और खेलों से भरपूर ।
मंदिर-मस्जिद चर्चओं कलाकेन्द्र से पूर इल्मों से भरपूर ॥
बंबई पुरी आदि में भी भारत का द्वार ।
ऐसी नगरी विश्व में उन्नति का आधार ॥
हाथी की गुफाएँ और मणिभवन दर्शनीय ।
कमला नेहरू पार्क और जुहुबीच दर्शनीय ॥
भारतीय विद्या भवन, पुस्तकालय अनेक ।
आर्ट गैलरी जू यहाँ विहार-भवन अनेक ॥
गुजराती और मराठी स्थानीय है ज़बान ।
अंग्रेजी, हिन्दी, तमिल, प्रचलित आम ज़बान ॥
सपनों का पुर बंबई, विभिन्न संस्कृतिमान ।
बौद्धिक विकास के लिए, यही प्रतिष्ठावान ॥

- १, हनुमंतरायन मंदिर गली, ट्रिप्लिकेन, चेन्नई - ६०००০५.

काव्य भारती - २

त्योहार

- टी.ई.एस.राघवन

पोंगल मंगल दिवस है, इस में नहि मतभेद ।
पोंगल खाकर व्यक्ति को, होता है क्या खेद ॥
पोंगल के मृदुपर्व में मुदकर हैं दिनरात ।
फूल उठे हैं लोध तरु, धान पके इक साथ ॥
चार दिनों का त्योहार होता है यह पर्व ।
शांति शुद्धता आदि का परिचायक यह पर्व ॥
क्या नर, क्या पशु, क्या विहग, सब हैं सालंकार ।
खान-पान परिधान में, होता नव संचार ॥
पोंगल चावल-दूध से, निर्मित मिष्ठान्न ।
खाद्य वस्तु पोंगल सदा, षट् रस से संपन्न ॥
पोंगल का मांगलिक, हो अनुपम संदेश ।
प्रति मानव आदर्शयुत, पालक हो आदेश ॥
पोंगल से द्रविड लोग पाते हैं सुख चैन ।
बैल-गाय के समान होते हैं दिन रैन ॥

- १, हनुमंतरायन मंदिर गली, ट्रिप्लिकेन, चेन्नई - ६००००५.

राष्ट्रीय युवा योजना द्वारा
अंदमान में राष्ट्रीय एकात्मता शिविर
२१ से २८ फरवरी २०१४
मार्गव्यय तथा जहाज में भोजन का खर्च स्वयं करें. मार्गव्यय के लिए ४000/- रु. तुरन्त भेजें. इच्छुक युवा तुरंत संपर्क करें
श्री के.सुकुमारन
युवा विकास केंद्र
पायन्नूर केरल (PAYYANUR), जि.कन्नूर
मो. ०९४४७४८२८१६ ई-मेल - karayilsukumaran@yahoo.com
डा.एस.एन.सुब्बराव
निदेशक राष्ट्रीय युवा योजना
२२१, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - ११०००२
फोन ०११२३२२२३२९ मो. ०९८७०३५०४०४

कथा भारती - ९ धारावाहिक - २२

संघर्ष और सफलता की गाथा

बराक ओबामा

- डॉ.विद्या केशव चिटको

(गतांक से आगे...)

काले व सफ़ेद एशियाई भारतीय जवान और बूढ़े सभी एक अलग वास्तविकता के लिए जागृत हो गए. काले मैदान के लोग अपने बच्चों के संबंध में इस आंदोलन के परिणाम की वजह से इस प्रत्याशा से अभिभूत थे कि वे भविष्य में किसी भी चुनौती के लिए तैयार हो जाएंगे और समानता की दिशा में विगत में जो बाधाएं उपस्थित हुईं थीं उनसे मुक्त होने के सबूत के रूप में इस घटना को देखने लगे.

श्वेत भवन में काले का प्रवेश असंभव से संभव हुआ था. ओबामा जब आठ नौ साल का था तब से उसने व्हाईट हाउस के फोटो किताबों में और मैगजिन्स में देखे थे. उसने तो यह जाना था कि ब्लैक उसमें कभी प्रवेश नहीं पाते. जब भी वह चित्रों में इस भव्य भवन को देखता उसकी आखें वहीं ठहर जाती थीं. व्हाइट हाउस उसका आकर्षण था. वह सोचता कि आल्पस पर्वत या हिमालय एवरेस्ट पर पहुंचना एक बार संभव है पर व्हाइट हाउस में ब्लैक का प्रवेश. क्या कभी संभव है ? आकाश को जमीन पर लाने जैसी कल्पना है एक चमत्कार है.

१९८४ में ओबामा हार्वर्ड से लॉ की पदवी लेकर बाहर निकला था और न्यूयार्क के सीटी कॉलेज. हालम कैम्पस्स में समुदाय संगठक की हैसियत से काम कर रहा था. रीगन उस समय अध्यक्ष थे. छात्रों को मिलने वाली सहायता निधि में कटौती, कुछ कमी कर दी गई थी. उसके विरुद्ध याचिका तैयार कर ग्रुप लीडर के रूप में उस निवेदन पत्र को न्यूयार्क सामूहिक प्रतिनिधि मंडल को देने के लिए वह गया था.

इसमें सभी छात्र श्यामवर्णीय ब्लैक थे. और ज्यादा ऊंचे वंश या पूर्वी यूरोपीय सभ्यता के थे. कई छात्र ऐसे थे जिनकी तीन पीढ़ियों में से किसी ने भी स्कूल

की दीवार तक कभी नहीं देखी थी. कॉलेज तक पहुंचना तो बड़ी दूर की बात थी. ऐसे छात्रों का प्रतिनिधित्व करते हुए वह न्यूयार्क गया था.

वाशिंगटन डीसी बाहर से व्हाइट हाउस गुंबद उसने दूर से देखा था. पेनसिलव्हानिया मार्ग से भी दो सौ गज पीछे तक ब्लैक प्रवेश नहीं पा सकते थे. पुलिस गार्ड का चौबीस घंटे कड़ा पहारा रहता था. ओबामा ने प्रथम बार अपनी आखों से उस व्हाइट हाउस को देखा था उस व्हाइट हाउस को वह देखता ही रहा.

सेनेटर हो जाने के बाद ओबामा ने प्रथम बार व्हाइट हाउस में प्रवेश किया था जब व्हाइट हाउस विधायी स्टाफ की और सिनेटर्स की मिटिंग बुलाई गई थी उसके लिए वह क्षण अमूल्य रहा. जांच टिकाने सशस्त्र गार्ड, वाहन दर्पण, कुत्ते और हटाने लायक प्रतिबंधक सब मौजूद होते हुए भी सिनेटर ओबामा की कार प्रधान प्रवेश द्वार से आगे चली गई. किसी ने उसे रोका नहीं गोल्ड रूम तक जहां और भी सेनेट सदस्य पहले से मौजूद थे. स्वप्न साकार हुआ था. बीस साल बाद श्याम वर्णीय का व्हाइट हाउस में प्रवेश. अद्‌भुत...

और अब बराक ओबामा अपने परिवार के साथ उस व्हाइट हाउस में रहने आया है. स्वप्न साकार हुआ है ओबामा कहता है...

''अंत में, यह
हमारे लिए ईश्वर का वरदान है
जिसका कोई
भरोसा ही नहीं था''

यूनाइटेड स्टेटस ऑफ अमेरिका के प्रेसिडेंट पद पर बराक ओबामा, व्हाईट हाउस में उसका निवास-एक अफ्रिकन अमेरिकन.

९ अक्तूबर, २००९ को बराक ओबामा को नोबल पीस प्राईज नोबल शांन्ति पुरस्कार घोषित किया गया.

बराक ओबामा अब विश्व व्यक्तित्व सम्पूर्ण विश्व उसकी ओर आशा आकांक्षा और अभिमान पूर्वक देख रहा था और सबने यह जाना कि, "Yes We Can We Can... Yes we can... ''हाँ हम भी सफलता हासिल कर सकते हैं...''

(समाप्त)

८, रामाई, अक्षर सोसायटी,
समर्थ नगर, नासिक - ४२२००५ (महा.)

विशेष आलेख - १

इथोपिया : मानव सुनामी का कहर

- थामस सी माऊंटेन

इटली और ग्रीस में उत्तरी अफ्रीकी शरणार्थियों से भरी नावों के डूबने को लेकर मचा कोलाहल सारी दुनिया को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है. वहीं अफ्रीका के एक अन्य देश इथोपिया में प्रतिदिन ही ऐसा घटित हो रहा है. इसकी वजह वहां की सरकार का जातीय भेदभावपूर्ण रवैया है. विशिष्ट जाति समूहों को भूख से मारकर सुनियोजित ढंग से उनका नरसंहार हो रहा है. वहीं दूसरी ओर इथोपिया को विश्व में सर्वाधिक विदेशी आर्थिक मदद मिलती है. भारतीय उद्योगपतियों के भी वहां के हित किसी से छुपे नहीं हैं. चीन भी वहां पैठ जमा रहा है. क्या इस अन्याय में संपूर्ण विश्व की सहमति है. इथोपिया की त्रासदी को सामने लाता महत्वपूर्ण आलेख.

पिछले एक दशक से प्रति वर्ष १० लाख से ज्यादा इथोपियाई नागरिकों ने या तो अपनी मातृभूमि को छोड़ दिया है या वे वहां से भाग खड़े हुए हैं. ये सिलसिला अभी भी बदस्तूर जारी है. जहां एक ओर टेलीविजन के पर्दे पर इटली के द्वीप लाम्पेडस में उत्तरी अफ्रीका के डूबे पलायनकर्ताओं की तस्वीरों की भरमार है वहीं हिंद महासागर या लाल समुद्र के निचले तल पर स्थित यमन के तटों पर हजारों हजार इथोपियाई शरणार्थियों की हड्डियां अचिन्हित कब्रों में दबी पड़ी हैं.

आप पूछ सकते हैं कि एक करोड़ लोगों की यह मानव सुनामी के प्रति विश्व इतना अनजान क्यों है? और क्यों एक करोड़ इथोपियाई नागरिक यानि देश के हर आठवें व्यक्ति में से एक अपनी जान जोखिम में डालकर विदेशों खासकर अनजान द्वीपों में शरण ले रहे हैं? इसका उत्तर इथोपियाई शासन की नीतियों में छुपा है, जिसे संयुक्त राष्ट्र संघ ने खाद्य एवं स्वास्थ्य सेवा बाधित करने वाली, घर फूंक विद्रोह या आतंकवादी विरोधी रणनीतियां और कई मामलों में जाति संहार तक कहा है.

अधिकांश इथोपियाई शरणार्थी ओरोमो राष्ट्रीयता के हैं. गौरतलब है कि इथोपिया की आधी जनसंख्या यानि करीब ४ करोड़ ओगाडेन के सोमालिया मूल की है. दक्षिणी इथोपिया के ये दोनों अंचल विश्व में मनुष्यों पर अभी तक जानकारी में लाए गए सबसे लंबे चलने वाले सर्वाधिक अमानवीय व क्रूर व्यवहार के साक्षी

रहे हैं. ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि अठारहवीं शताब्दी के अंत में सम्राट हेले सेलासी के पूर्वजों ने पश्चिमी देशों द्वारा समर्थित ऐबसिनिअब सामंतवादी उपनिवेशवाद के दौरान वहां निवासरत ओरोमो में से आधों को कत्ल कर दिया था. पिछले कुछ वर्षों से 'अफ्रीका का सींग' कहे जाने वाले इस देश को पिछले ६० वर्षों के सबसे भयंकर अकालों का सामना करना पड़ रहा है. लेकिन इस भयानक आपदा से प्रभावित ओरोपिया एवं ओगाडेन संप्रदायों को इथोपियाई शासन खाद्य एवं स्वास्थ्य संबंधी मदद पहुंचने से रोक रहा है. ऐसा क्यों है कि ऐसी मानवीय त्रासदी के समय में विश्व के एक देश को अपने यहां से रेडक्रॉस और बिना सीमा वाले चिकित्सकों को निष्कासित करने की अनुमति दे दी जाती है और इतना ही नहीं अंतरराष्ट्रीय समुदाय उसके इस कार्य की भर्त्सना भी नहीं करता?

सवाल उठता है कि ऐसा केवल इथोपिया में ही क्यों?

संयुक्त राष्ट्र संघ ने स्वीकारा है कि इस अकाल से केवल सोमालिया में ढ़ाई लाख लोगों की भूख से मृत्यु हुई है. वहीं ओरोमिआ और ओगाडेन तो इससे भी बड़ी संख्या में मारे गए हैं. किसी देश में पिछले दो वर्षों में भूख से पांच लाख लोगों की मौत हुई हो और दुनिया में इसे लेकर कोई हंगामा नहीं? एक समय वहां यह स्थिति थी कि यहां प्रतिदिन भूख से एक हजार से अधिक व्यक्ति जिनमें अधिकांश महिलाएं, बच्चे और बूढ़े थे, मर रहे थे और हमें बदले में क्या मिला? न्यूयॉर्क टाईम्स के अनुसार सीआईए की 'डर्टी वार' (घिनौने युद्ध) पर लिखा बेस्ट सेलर उपन्यास 'हार्न ऑफ अफ्रीका'. यह उपन्यास भी कमोवेश इस दुर्दांत अपराध की भर्त्सना करने में असफल रहा.

इथोपिया को विश्व में सर्वाधिक मदद खासकर पश्चिमी देशों से मिलती है. सूत्रों के अनुसार अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के आदिस अबाबा (इथोपिया की राजधानी) स्थित कार्यालय से यह बात सामने आई है कि इथोपिया का आयात करीब १२ अरब डॉलर प्रति वर्ष पर पहुंच गया है और इसका निर्यात महज २ अरब डॉलर है. यानि प्रति वर्ष १० अरब डॉलर या तो 'मदद', 'ऋण' या 'निवेश' के माध्यम से आ रहे हैं, जिसकी वजह से इथोपिया पूरी तरह से विदेशी वस्तुओं पर निर्भर हो गया है. लेकिन दुःखद यह है कि इसके बावजूद

पूरा विश्व हजारों हजार लोगों के भूख से मरने को या प्रति वर्ष एक करोड़ लोगों के देश छोड़ देने को रोक पाने में असमर्थ है?

पिछले दो वर्षों में हमने २० लाख से ज्यादा इराकी शरणार्थियों और अब २० लाख से अधिक सीरियाई शरणार्थियों से संबंधित रिपोर्टें देखी हैं. वहीं दूसरी ओर इससे दुगनी से भी ज्यादा संख्या में इथोपियाई शरणार्थी बन चुके हैं और विश्व कमोवेश इस वास्तविकता से अनजान है? जब मैं इन अपराधों की बात कर रहा हूं तो भूतकाल या अतीत की बात नहीं कर रहा हूं. आज भी ३००० से ज्यादा इथोपियाई नागरिक प्रतिदिन अपना घर छोड़ रहे हैं. यानि करीब एक लाख प्रतिमाह और दस लाख प्रति वर्ष. अनेक लोग नावों से सोमालिया के तट से यमनी तटों की ओर इस उम्मीद में पलायन करते हैं कि वे वहां सुरक्षित रहेंगे. लेकिन कितनी ही नावें समुद्र में सबको साथ लेकर डूब जाती हैं या इससे भी बुरा यह है कि न मालूम कितने लोगों को तट पर पहुंचने से पहले ही समुद्र में फेंक दिया जाता है. इनकी वास्तविक संख्या हमें शायद कभी भी पता नहीं चलेगी.

इस क्षेत्र की निगरानी कर रही अंतरराष्ट्रीय एजेंसियां भी इन मानव तस्करी माफियाओं द्वारा चलाए जा रहे इस शैतानी व्यापार को रोकने के बजाए इसी समुद्र में बड़ी जहाजी कंपनियों के हितों की रक्षा में अधिक लगी रहती हैं. क्या आपने कभी किसी मानव तस्करी मुख्यालय में ड्रोन या कमांडो हमले की बात सुनी है? क्या आपने इस नराधम की प्रतीक मानव त्रासदी को अंजाम देने वालों को किसी 'मोस्ट वाटेंड' की सूची में देखा है? निराशा की बात तो यह है कि इथोपिया पर शासन करने वाले अपराधियों को अपना काम करते रहने की न केवल अनुमति दी जा रही है, बल्कि सन् २०१० से अब तक ''विदेशी मदद और निवेश'' में भी ३० प्रतिशत की वृद्धि हो गई है. वहीं दूसरी ओर इसी अवधि में हजारों हजार इथोपियाई भूख से मर गए हैं.

तो अगली बार जब आपको इटली के तटों पर लाशों की पंक्तियों की तस्वीरें दिखाई दें, तो याद रखिए कि 'हार्न ऑफ अफ्रीका' में तकरीबन रोज ही यह दृश्य उपस्थित होता रहता है. लेकिन शायद इसे टिप्पणी के लायक ही नहीं समझ जाता और अंतरराष्ट्रीय मीडिया में लगातार छाए रहने वाले सभी टिप्पणीकार भी इसको लेकर आंख मूंदे हुए हैं.

❑

विशेष आलेख - २

रतनगढ़ हादसा : ईश्वर की ग्लानि

- चिन्मय मिश्र

इस पुण्य घड़ी पर तुम्हें क्या संबोधन दूं
तुम सब कुछ को बचाने-बेचने-सजाने वाले
साक्षात अवतार क्या कुछ नहीं समझते खुद को!

चंद्रकांत देवताले

यह दुर्घटना थी या मानव निर्मित आपदा? फर्क करना अब अनिवार्य हो गया है. मध्यप्रदेश के दतिया जिले में स्थित रतनगढ़ माता के मंदिर जाने वाले रास्ते पर महानवमी यानि १३ अक्टूबर २०१३ को हुई इस घटना ने उपरोक्त प्रश्न खड़े किए हैं. गौरतलब है यह हादसा मंदिर परिसर या गर्भगृह में नहीं बल्कि वहां से करीब तीन किलोमीटर दूर स्थित सिंधु नदी पर बने पुल पर हुआ है. यदि हम इस स्थान की तस्वीरें देखें तो पाएंगे कि ५०० मीटर लंबे और २५ फुट चौड़े इस पुल के आगे और पीछे काफी बड़ा इलाका खाली पड़ा है जहां पर कि हजारों लोग खड़े रह सकते हैं. तो ऐसा क्या हो गया कि इस जंगल में मची भगदड़ में सरकारी आंकड़ों के हिसाब से ११५ और गैर सरकारी सूत्रों के अनुसार ३०० से ४०० लोग मारे गए और सैकड़ों घायल हो गए. वैसे इस हादसे में मरने वाले ज्यादा हैं और घायल कम!

प्रत्यक्षदर्शियों और प्रभावितों दोनों का ही कहना है कि सुबह ८ से ९ बजे के बीच हुई दुर्घटना की मुख्य वजह यह है कि एक तो वहां तैनात पुलिस बल आवश्यकता से बहुत कम था. वहां पर उस भीड़ के समय करीब दो दर्जन पुलिस कर्मचारी ही उपस्थित थे. इस पर उन्होंने ट्रैक्टर ट्राले वालों से ३०० रु. लेकर उन्हें पुल पर से जाने की अनुमति दे दी, जिससे मार्ग अवरुद्ध हो गया, फलस्वरूप लोगों में बेचैनी फैली और इसी बीच यह अफवाह फैला दी गई कि पुल टूट रहा है. इस पर जनता बदहवास होकर दौड़ी पुलिस ने आव देखा न ताव लाठी चार्ज शुरू कर दिया. कुछ का कहना है कि पुलिस बजाए जनता को संभालने के खुद को बचाने में लग गई. पूरे इलाके में सार्वजनिक उद्घोषणा का कोई इंतजाम नहीं था. बहरहाल सिर्फ अफवाहें ही बिना तकनीक के फैल

सकती हैं और उन्होंने एक बार पुनः अपने को सिद्ध किया और लोग वर्तमान से अतीत बन गए.

बात अनदेखी या बदइंतजामी पर आकर ठहर जाती तो भी गनीमत थी. लोगों का कहना है कि पुलिस ने घायलों और मृतकों को पुल से उठाकर नदी में फेंक दिया. (अभी तक सुदूर नदी में लाशें मिल रही हैं) कुछ का कहना है कि घायलों और लाशों के शरीर से कीमती जेवरात उतार लिए गए और जेबों में रखी नकदी भी लूट ली गई. ये सब वहां हो रहा है जहां से सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी के तीन मजबूत मंत्री नरोत्तम मिश्रा, अनूप मिश्रा और नारायण सिंह कुशवाह आते हैं. इसके अलावा प्रदेश भाजपा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर भी इसी अंचल से हैं. घटना के समय ग्वालियर से आया रक्षित बल आदेश की प्रतीक्षा में जिला मुख्यालय दतिया में बैठा रहता है और यहां यह हादसा हो जाता है. सोचिए, अब यह दुर्घटना है या मानव निर्मित त्रासदी? तिस पर भाजपा और सरकार का कहना है कि ऐसे मसलों पर राजनीति नहीं होनी चाहिए. अगर ऐसी गंभीर चूक भी राजनीति का विषय नहीं होगी तो फिर हम राजनीति से क्या अपेक्षा रखते हैं? सिर्फ चुनाव और उसके बाद पद ग्रहण करना या विपक्ष में बैठना?

प्रदेश में या देश में होने वाली इस तरह की घटनाएं और दुर्घटनाएं राजनीति से बहिष्कृत कैसे हो सकती हैं. प्रदेश की जनता ने किसी राजनीतिक दल को चुनकर या उसे अस्वीकार कर अपनी राजनीतिक इच्छाशक्ति की अभिव्यक्ति की है. इस लिहाज से चुनी गई सरकार की प्रत्येक गतिविधि फिर चाहे वह उसकी सक्रियता की हो या अकर्मण्यता, राजनीति के नजरिए से ही देखी जानी चाहिए और उस पर दी जाने वाली प्रतिक्रिया का राजनीति से निरपेक्ष होना स्वीकार्य नहीं हो सकता.

दिग्विजयसिंह के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार को विधानसभा चुनावों में हराकर भारतीय जनता पार्टी ने सन् २००३ में मध्यप्रदेश पर शासन करना आरंभ कर दिया था. उमा भारती ने ८ दिसंबर २००३ को मुख्यमंत्री का पद संभाला और वे २३ अगस्त २००४ तक मुख्यमंत्री रहीं. इसी दिन से बाबूलाल गौर ने मुख्यमंत्री का पद संभाला और वे २९ नवंबर २००५ तक मुख्यमंत्री रहे. इसके बाद से यानि २९ नवंबर २००५ से आज तक शिवराजसिंह चौहान

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री हैं. अब बड़े हादसों की निरंतरता को देखते हैं. मध्यप्रदेश के देवास जिले के धाराजी नामक स्थान पर बिना बताए इंदिरा सागर बांध का पानी छोड़ देने से वहां पर अमावस्या के अवसर पर स्नान करने आए १०० के करीब तीर्थयात्रियों की जल समाधि हो गई थी. इस समय बाबूलाल गौर मुख्यमंत्री थे. इसके बाद रतनगढ़ माता के मंदिर मार्ग में बने कच्चे पुल के टूटने और नदी के तेज प्रवाह की वजह से ४९ (कुछ का मानना है ५७) श्रद्धालुओं की जान चली गई थी. यह वाकिया १ अक्टूबर २००६ का है और तब तक शिवराजसिंह मुख्यमंत्री बन चुके थे. यहां पर उस दिन शिवपुरी जिले में सिंध नदी पर स्थित मड़ीखेड़ी बांध से काफी मात्रा में पानी छोड़ा गया था. जिसके तेज प्रवाह से यह दुर्घटना हुई. शर्मनाक तथ्य यह है कि १३ अक्टूबर २०१३ को भी मड़ीखेड़ी बांध से पानी का तेज प्रवाह जारी किया गया या रोका नहीं गया.

ये तीनों घटनाएं बता रही हैं कि लापरवाही की कोई सीमा नहीं है. ओंकारेश्वर बांध का प्रबंधन एनएचडीसी नामक एक सरकारी कंपनी करती है और उसने बिना देवास जिले के कलेक्टर की अनुमति के या उन्हें सूचना दिए बांध के दरवाजे खोल दिए और प्रशासन की सारी व्यवस्थाएं धरी रह गई हैं और आज तक घटना की जिम्मेदारी तय नहीं हो पाई है. रतनगढ़ में हुई अक्टूबर २००६ में हुए पहले हादसे की घटना की भी न्यायिक जांच के आदेश हुए. रिपोर्ट आ गई. सूचना अधिकार का कार्यकर्ता अजय दुबे को आरटीआई के अंतर्गत जांच रिपोर्ट नहीं दी गई और न ही इसे विधानसभा में प्रस्तुत किया गया. अब पुनः न्यायिक जांच आयोग बैठा दिया गया है वह तय करेगा कि किसकी गलती है. लेकिन यहां इस बात पर गौर करना आवश्यक है कि रतनगढ़ में जब कच्चा पुल था तो ५० के करीब लोग मरते हैं और जब उसी स्थान पर पक्का पुल बन गया तो पहले ढाई गुना ज्यादा यानि करीब ११५ से अधिक लोग मरते हैं. साथ ही इस तथ्य पर भी गौर करिए कि सन् २००५ की घटना से २००६ में सबक नहीं लिया गया. इसे लापरवाही कहा जाए या जनसंख्या नियंत्रण? इस बीच सिंधु नदी में न मालूम कितना पानी बह गया, लेकिन मौत वहीं ताक लगाए बैठी रही. ऐसा नहीं है कि इस बीच मध्यप्रदेश में धार्मिक स्थलों पर भगदड़ से मरने वाली घटनाएं नहीं हुई हैं. मार्च २००८ में अशोक नगर में रंगपंचमी के अवसर पर

करीला स्थित सीता मंदिर में ८ व्यक्तियों की मृत्यु हुई. पिछले ही वर्ष यानि १३ जनवरी २०१२ को रतलाम के पास जावरा में स्थित हुसैन टेकरी में भगदड़ से १२ लोग मरे और मुख्यमंत्री के गृह जिले सीहोर में स्थित सलकनपुर देवी मंदिर में २० अक्टूबर २०१२ को मची भगदड़ में २ लोग मारे गए थे. मगर रतनगढ़ की घटना की गणना तो विश्व के आश्चर्यों में होनी चाहिए, क्योंकि लापरवाही की वजह से ठीक एक ही स्थान पर कुछ वर्षों के अंतराल पर पुनः दुर्घटना होती है और पहले से भी अधिक लोग मारे जाते हैं. क्या यह राजनीति का विषय नहीं है? घायलों से चिकित्सा के लिए धन मांगना क्या दर्शाता है? विपक्षी दल के नेता राहुल गांधी के अस्पताल पहुंचने का समाचार सुनकर गंभीर घायल ४९ व्यक्तियों में से १९ को डिस्चार्ज कर देना क्या राजनीति नहीं है? यदि वे ठीक हो गए थे तो ४ घंटे के प्रदर्शन के बाद उन्हें पुनः क्यों भर्ती किया गया.

हम सब उदाहरण देते हैं कि रेल दुर्घटना हो जाने पर तत्कालीन रेलमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने इस्तीफा दे दिया था, लेकिन मध्यप्रदेश में एक ही स्थान पर एक सी परिस्थितियों में दो बार दुर्घटना होने और १५० लोगों की मृत्यु के बाद प्रदेश के मुख्यमंत्री का पद पर बने रहना क्या नैतिकता के मापदंड पर खरा उतरेगा?

आज भारतीय शासन तंत्र तो अपनी गलती मानने को तैयार नहीं है. ऐसे में लगता है शायद सब कुछ ईश्वर का ही करा-धरा है. नरेश सक्सेना ईश्वर की यातना को अभिव्यक्त करते हुए कहते हैं,

निराकार नहीं है वो
पर किसी बात का जवाब नहीं उसके पास
क्योंकि सब कुछ तो उसी का किया धरा है
दरअसल मुंह दिखाने के काबिल
अब वो रहा ही कहां. ❑

हमारा ई-मेल का पता

e-mail : antarbharati.patrika@gmail.com
raavas@rediffmail.com

लेख इस ई-मेल पर भी भेजे जा सकते हैं

आंतर भारती पत्रिका के ग्राहक बने / बनाएँ

विशेष आलेख - ३

मृत्युदंड : आंधी से उखड़ती दूब

- *प्रशांत कुमार दुबे*

मृत्युदंड को भले ही कानूनी रूप से उचित ठहराया जाए, लेकिन क्या इसे सभ्य समाज का द्योतक माना जा सकता है? मृत्युदंड की मांग एक अत्यंत शांत और अहिंसक मनुष्य में थोड़ी देर के लिए ही सही पर हिंसा का भाव पैदा कर देती है. धीरे-धीरे यह हिंसा समाज का अनिवार्य अंग भी बनने लगती है. कानूनी तौर पर न्यायालयों द्वारा दिए जाने वाले मृत्युदंड के बरस्क अब खाप पंचायतें या अन्य कई अनैतिक संगठन भी स्वयंभू होकर मृत्युदंड की सजा सुनाने लगे हैं. इस विषाक्तता को समाप्त करने की पैरवी करता महत्वपूर्ण आलेख.

त्वरित न्याय का एक नमूना देखिए! मध्यप्रदेश के सीहोर जिले के इछावर ब्लॉक के कनेरिया गांव में ११ जून २०१० को मगनलाल ने अपनी ५ बेटियों को मौत के घाट उतारा. प्रकरण दर्ज हुआ. ३ फरवरी २०११ को सीहोर अदालत से उसे फांसी की सजा सुनाई गई. १२ सितम्बर २०११ को उच्च न्यायालय ने भी यह सजा बरकरार रखी और ९ जनवरी २०१२ को उच्चतम न्यायालय ने इसकी पुष्टि कर दी. यही नहीं २२ जुलाई २०१३ को राज्यपाल और राष्ट्रपति के यहां से भी इसकी दयायाचिका खारिज हुई और तुरत-फुरत ८ अगस्त २०१३ को फांसी का दिन मुकर्रर कर दिया गया. यानी केवल तीन साल में ही प्रकरण का निपटारा. जबलपुर सेंट्रल जेल में बंद इस कैदी को फांसी देने के लिए जल्लाद भी लखनऊ से आ गया, रिहर्सल भी हो गई थी, लेकिन ७ अगस्त को फांसी की सजा को लेकर दिल्ली के कुछ प्रगतिशील वकीलों ने रात ११ बजे इस पर स्थगन लिया.

लेकिन यह त्वरित निपटारा हमारी न्यायिक व्यवस्था के ऊपर एक तमाचा भी है. यह दर्शाता है कि जो व्यक्ति आर्थिक रूप से कमजोर है, जिसके पास एक अच्छा वकील खड़ा करने की हिम्मत न हो, उसे पर्याप्त साक्ष्यों के अभाव में

भी धड़धड़ाते हुए फांसी के तख्ते तक पहुंचा दिया जाता है. मगनलाल को इस प्रकरण में विधिक सहायता तो मिली, लेकिन उसकी गुणवत्ता अच्छी नहीं थी और मगन का पक्ष कहीं भी ठीक से नहीं रखा गया. इस पूरे प्रकरण में न्याय व्यवस्था से कई जगह चूक हुई है. साधारणतया फांसी दिए जाने का कारण सहित लंबा आदेश आता है. शायद यह पहला ही ऐसा प्रकरण है जिसमें केवल एक शब्द में फैसला आया है जिसमें लिखा है 'बर्खास्त'.

मगनलाल बारेला मध्यप्रदेश के बड़वानी जिले के सेंधवा ब्लॉक से आकर ३० बरस पहले कनेरिया में बस गया. परिवार के पास दो एकड़ जमीन थी तथा परिवार में थीं दो पत्नियां और ८ बच्चे. घर खर्च चलाने हेतु परिवार की दोनों महिलाएं भी पास ही के जंगल से मूली (लकड़ी का गट्ठा) लाकर बेचती थीं. इसका अधिकतम दाम ४५ रूपये तक ही मिल पाता है. इसके अलावा रोजगार गारंटी और वन विभाग में थोड़ा काम मिलता है.

वैसे मगनलाल पर कर्ज की बात कई मीडिया रिपोर्टों में सामने आई है, पर परिवार इससे अनभिज्ञ है. संतू और बसंती बाई बताती हैं कि कई बार हम लकड़ी बेचकर आटा लाते थे और तब खाना बनता था. फसल आने पर कुछ दिन तो सब ठीक रहता था, लेकिन उसके बाद फिर यही स्थिति बन जाती थी.

चार्जशीट के अनुसार मगनलाल ने गरीबी की परिस्थिति से तंग आकर अपनी पांच बेटियों की हत्या कर दी. लेकिन जमीनी परिस्थितियां और कोई साक्ष्य ऐसा सिद्ध नहीं कर पाते. उनके भाई (अगन और जगन) बताते हैं कि शाम के करीब ५ बजे हम लोग अपने घरों में थे. उसकी दोनों पत्नियां संतू और बसंती रोज की तरह लकड़ी लेने जंगल गई थीं. मगन घर पर लड़कियों के साथ अकेला था. अचानक हल्ला व हंगामा सुनकर हम लोग इस तरफ आए, तो हमने देखा कि हमारा भाई मगन, फांसी के फंदे पर झूल रहा है. छगन दौड़कर घर से कुल्हाड़ी लाया और भाई की रस्सी काटी तब वह अर्धमरणासन्न अवस्था में था. उसके बाद हमने देखा कि घर के अंदर पांचों लड़कियां (१ से

६ वर्ष तक की) मरी पड़ी हैं. सभी की गर्दन पर वार किया गया था. हमने सोचा कि भाई ने ही इन्हें मारा है और तब हमने उसे पेड़ से बांधा और पुलिस को फोन किया.

उसने कैसे और क्यों लड़कियों को मारा या उसने ही लड़कियों को मारा यह अभी तक स्पष्ट नहीं है. मगन का कहना था कि किसी ने आकर मेरी लड़कियों को मारा और मुझे टांग कर चले गए. भाइयों और पत्नियों का कहना है कि उस समय वह शराब पिए हुए नहीं था. मगन कहता है कि उन तीन दिनों में क्या हुआ, मुझे कुछ नहीं पता. लोगों का कहना है कि वह लड़कियों को बहुत प्यार करता था और कभी किसी को मारता भी नहीं था. वो तो बेटियों को अपने साथ बिठाकर ही खाना खिलाता था, पर उस दिन अचानक क्या हुआ, यह समझ से परे है.

गांव की ही मधु मीना कहती हैं कि मगन को घटना के दो-तीन माह पहले से ही कुछ हो गया था. वह गुमसुम और शांत रहने लगा था, कुछ बात करते तो ही बोलता था. जंगल में ही डोलता (घूमता) रहता था. वह कुछ पागल सा हो गया था. ऐसा केवल मधु नहीं, बल्कि अधिकांश लोग यही कहते हैं. लेकिन पूरे प्रकरण में ऐसा जिक्र कहीं भी नहीं आया है. बहरहाल इस पूरे प्रकरण ने देश में फांसी के जिन्न को फिर से बाहर लाकर खड़ा कर दिया है. अजमल कसाब की फांसी ने इस बहस को फिर सुलगाया है कि भारत को मृत्युदंड बरकरार रखना चाहिए या नहीं. एमनेस्टी इंटरनेशनल के अनुसार भारत में पिछले दो दशक में केवल चार व्यक्तियों को फांसी दी गई है, लेकिन इस कतार में चार सौ पैंतीस नाम हैं. मानवाधिकार समूहों ने भी भारत में मृत्युदंड खत्म किए जाने की मांग फिर दोहराई है. वैसे ११० देश मृत्युदंड को नकार चुके हैं.

उच्चतम न्यायालय ने १९८२ में ही कहा था कि मृत्युदंड बहुत विरल (रेअरेस्ट ऑफ रेयर) मामलों में ही दिया जाना चाहिए. हालांकि हाल ही में भारत ने अड़तीस अन्य देशों के साथ संयुक्त राष्ट्र में मृत्युदंड का समर्थन किया. यह भारत के एक विरोधाभास को ही दर्शाता है. एक ओर देश ने मानवाधिकारों के

संरक्षण वाली अंतरराष्ट्रीय संधियों पर हस्ताक्षर किए हैं, लेकिन दूसरी ओर वह उन थोड़े-से देशों में शामिल है जो मृत्युदंड को बरकारर रखने की पैरवी कर रहे हैं.

मृत्युदंड लोकतांत्रिक व्यवस्था और सभ्य समाज के नाम पर कलंक है. गौरतलब है कि सरकार पहले तो किसी व्यक्ति को गरीबी में जीने दे, उसे बेहतर जीवन जीने के अवसर ही

उपलब्ध ना कराए, लेकिन उन विपरीत परिस्थितियों में जब व्यक्ति हताश-निराश होकर कोई कदम उठा ले तो उसे फांसी दे दी जाए. बहरहाल, फांसी देकर सरकार ने अपनी कमियों पर ही परदा डाला है. गौरतलब है कि मगनलाल की पत्नियां और शेष ३ बच्चे पिछले ३ वर्षों में सामाजिक कार्यकर्ताओं की बदौलत ही उससे पहली बार मिल पाए हैं.

महात्मा गांधी ने कहा था कि मैं मृत्युदंड को अहिंसा के खिलाफ मानता हूं, अहिंसा से परिचालित व्यवस्था हत्यारे को सुधारगृह में बंदकर सुधरने का मौका देगी. अपराध एक बीमारी है, जिसका इलाज होना चाहिए. आंबेडकर ने भी कहा था कि मैं मृत्युदंड खत्म करने के पक्ष में हूं. एक मानवाधिकार कार्यकर्ता होने के नाते मुझे लगता है कि जब भी कहीं कोई व्यक्ति फांसी पर चढ़ाया जाता है तो वह अकेला नहीं, बल्कि उसके साथ उसके मानवाधिकार भी सूली पर टांग दिए जाते हैं.

यह वही सरकार है जो कसाब को फांसी दिए जाने के मामले में कहती रही कि आम आदमी चाहता था कि कसाब को फांसी दी जाए, इसलिए दी गई. क्या फांसी की सजा का प्रावधान किसी जनमत संग्रह का परिणाम है? अगर लोग चाहेंगे कि सरेआम चौराहे पर फांसी दी जाए, तो यह मांग सरकार स्वीकार कर लेगी? न्याय सुधार के लिए है लेकिन मृत्युदंड लोगों को यह अवसर प्रदान नहीं करता. हमें समझना होगा कि मृत्युदंड कभी भी न्याय का पर्यायवाची नहीं हो सकता.

❑

विशेष आलेख - ४

कोमलता से ही बचेगी सभ्यता

- डॉ. रामजी सिंह

बढ़ती संकीर्णता और सांप्रदायिकता ने पूरे वातावरण में कटुता भर दी है. इसकी वजह है बल प्रयोग की अत्यधिक आकांक्षा. पितृसत्ता कमोवेश कठोरता पर ही टिकी है और इसके प्रतिकूल परिणाम हम सबके सामने हैं. आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है सहनशीलता और करुणा की अभिव्यक्ति. इन्हीं दोनों के संयोग से उपजी कोमलता या मातृसत्तात्मकता हमें नवजीवन प्रदान कर सकती है. इसी विषय पर अत्यंत सारगर्भित आलेख.

विश्वभर में बढ़ती संकीर्णता के चलते राष्ट्रवाद का संयंत्र इतना गतिहीन हो गया है कि उसके स्थान पर विश्व राज्य की कल्पना को साकार करना ही होगा. यह केवल सुकरात, विंडेल विलकी की पुस्तक 'एक विश्व' और राहुल सांकृत्यायन की '२२वीं सदी' के समान स्वप्नदर्शी कल्पना का उपन्यास नहीं है, बल्कि विश्व मानवता की रक्षा के लिए एकमात्र उपाय है. एशियाई देशों के सम्मेलन में गांधीजी ने भी जोर देकर कहा था कि 'मैं विश्व के एकीकरण के बिना जीना नहीं चाहता.' आज पश्चिम यूरोप के २८ देशों में एक मुद्रा, एक संसद, एक पार-पत्र और एक बाजार स्थापित हो गया है तो क्या हम इस दुर्बल और अशक्त संयुक्त राष्ट्रसंघ के बदले एक समर्थ विश्व सरकार की स्थापना नहीं कर सकते? जिसमें किसी देश विशेष का वर्चस्व या मुट्ठीभर देशों की दादागिरी न होगी और सब समता, स्वतंत्रता और भ्रातृत्व की भावना से एक वैश्विक क्रांति का श्रीगणेश करेंगे.

जो धर्म मानवता के लिए शांति, सेवा दया-दान तथा परोपकार के प्रति अपनी निष्ठा मानता है, वह भी आज स्वार्थ और वर्चस्व के लिए मानव विद्वेष का एक अखाड़ा बन गया है. इसीलिए स्वामी विवेकानंद ने व्यक्तिगत धर्म के बदले विश्व धर्म की बात की थी. रवींद्रनाथ ने भी सांप्रदायिक धर्म के स्थान पर मानव धर्म का पक्ष लिया. गांधीजी ने तो यहां तक कहा कि ''अपने ही धर्म को सर्वश्रेष्ठ मानने का अर्थ है दूसरे धर्म को हीन समझना.'' जो एक अस्वस्थ अहंकार है. इसलिए उन्होंने सर्वधर्म सद्भाव का संदेश दिया. विनोबाजी ने स्पष्ट कहा है कि, आधुनिक युग में मजहब और सियासत के दिन लद चुके हैं. अब तो विज्ञान और रुहानियत का जमाना आया है. राष्ट्रकवि दिनकर ने भी कहा था कि, एक

हाथ में कमल एक में धर्म दित्त विज्ञान/लेकर उठने वाला है धरती पर हिंदुस्तान. यहां कमल किसी राजनीतिक दल विशेष का चुनाव चिन्ह नहीं बल्कि भगवान बुद्ध के धम्मपद का वह कमल है जो सर्वथा और सर्वत्र अनासक्त होता है.

वैश्वीकरण के लिए विश्व राज्य, शोषण एवं विषमता रहित अर्थरचना और विश्व धर्म तो चाहिए ही लेकिन सबों के संरक्षण के लिए मातृत्व की शीतल छाया भी चाहिए. दुर्भाग्य से मानवता के इतिहास में प्रारंभ से लेकर आज तक पुरुष सत्तात्मक व्यवस्था ही कायम रही है. वो सत्ता हो या शस्त्र, शिक्षा हो या सामाजिक नेतृत्व सभी पर पुरुष का ही वर्चस्व छाया रहा है यही कारण है कि त्रेता युग में भी मर्यादा पुरुषोत्तम राम के रामराज्य में भी वनवास के पश्चात जगत जननी सीता की अग्नि परीक्षा लेनी पड़ी. जबकि लक्ष्मण या राम की परीक्षा आवश्यक नहीं मानी गई. द्वापर में तो कौरवों की भरी सभा में धर्मराज युधिष्ठिर, गांडीवधारी अर्जुन, गदाधारी भीम के साथ-साथ धर्म की प्रतिमूर्ति भीष्म, आचार्य द्रोण और कृपाचार्य के समक्ष भी द्रौपदी के चीरहरण करने का पाप पूर्ण प्रयास किया गया. मध्य युग में पति की मृत्यु के पश्चात हजारों स्त्रियों को इच्छा विरुद्ध पति के शव के साथ जला दिया गया. जबकि आज तक किसी पुरुष ने पत्नी की मृत्यु के पश्चात जलने को सोचा तक नहीं.

धर्म के क्षेत्र में भी स्त्री-पुरुष असमानता स्पष्ट है. मध्य युग में शास्त्र के पठन-पाठन से भी स्त्रियां वंचित थीं. ईसाई धर्म में आज तक जितने पोप हुए, उसमें एक भी स्त्री नहीं है. जैन धर्म के २४ तीर्थंकरों में केवल १९वीं तीर्थंकर को छोड़कर सभी पुरुष वर्ग से ही हैं. राजनीति में भी पुरुषों का ही बोलबाला रहा है. भारत में महिलाओं को ३३ प्रतिशत आरक्षण का प्रस्ताव संसद में अधर में लटका हुआ है. भ्रूण हत्या के दुर्दांत क्षेत्र में स्त्री भ्रूण हत्या लगभग शत-प्रतिशत है.

संक्षेप में कहें तो मार्क्स के अनुसार मानवता का प्रथम शोषण जो पुरुष के द्वारा स्त्री के शोषण से शुरू हुआ था, वह आज तक कायम है. इसलिए पितृसत्तात्मक समाज के बदले मातृसत्तात्मक समाज का अवतरण नई विश्व व्यवस्था के लिए अत्यंत अनिवार्य है. मातृ शक्ति न केवल प्रजनन बल्कि सृजन, सहानुभूति, प्रेम और दया की भी शक्ति है. जिसकी प्रधानता से हिंसक समाज भी अपनी

बर्बरता और नि:शंसता को छोड़ सकता है.

आज राजनीतिक, आर्थिक और सांकृतिक विश्व व्यवस्था शोषण और विषमता पर टिकी हुई है जो संरचनात्मक हिंसा की जननी है. हिंसा के आधार पर न तो हम नया समाज बना सकते हैं और न तो हम नई राजनीति का स्वप्न देख सकते हैं. हिंसा को कालबाह्य मानकर शांतिमय विश्व का विकल्प ढूंढना होगा. अणु बम या अहिंसा और युद्ध या मानवता में से किसी एक को ही चुनना होगा. हमें याद रखना होगा कि विज्ञान के बिना आध्यात्म पंगु है. एक हाथ में विज्ञान की शक्ति और उसके साथ दूसरी ओर आध्यात्म की दृष्टि नहीं होगी तो वैश्वीकरण या नई सभ्यता एक दिवास्वप्न ही बना रहेगी.

समाचार भारती -२

आंतर भारती की १० मई २०१३ को संपन्न बैठक के निश्चयानुसार आंतर भारती की औराद शहाजानी (महाराष्ट्र) की शाखा ने रक्त सहयोग का कार्यक्रम किया. यहां यह कार्यक्रम गत २५-३० वर्षों से हो रहा है इसकी विशेषता यह है कि यहां युवतियां भी रक्त सहयोग करती हैं.

▶ डाक्टर्स दीप प्रज्वलन करते हुए

◀ युवती रक्तदान करते हुए

श्रद्धांजलि

डॉक्टर साहब की विरासत को चलाएँगे !

मेरा डॉ.दाभोलकरजी से स्नेहबंध १९८८ से २०१३ तक याने २५ साल का रहा. डॉ.दाभोलकरजी हमारे लिए समाज कार्यकर्ता किस तरह का हो इसका एक उत्तम आदर्श! प्रचंड कार्यक्षमता, अत्यधिक उत्साह, अपार कष्ट, प्रयत्नवाद की साक्षात् मिसाल, सत्शील वर्तन, निष्कलंक चरित्र समाज की उत्तम समझ, समाज के पीडितों के दुःख के लिए करुणा, एहसास, संवेदना, अपना जीवन न्योछावर करनेवाला निरलस कार्यकर्ता तथा नेता थे डॉ.दाभोलकरजी.

जिस समय ऐसे मनुष्य की आवश्यकता थी उसी समय उसकी निर्घृण हत्या! पुरोगामी महाराष्ट्र का एक और विचारस्तंभ अब हमारे साथ नहीं रहा. २०० शाखाएँ और जहाँ तालूका वहाँ अनिस इस चित्र को महाराष्ट्रभर खडा करनेवाला यह नेतृत्व! अनिस में पिछले २० साल से नियमित आनेवाले, अनिस में बने रहनेवाले युवा कार्यकर्ता! ऐसा कार्यकर्ता जो अपनी गाँठ का पैसा खर्च करके, परिवारजनों की आलोचना को सहते हुए, नौकरी रोजगार को सँभालते हुए, समाजकी गलत फहमी को दूर करते हुए, नाराजगी को सहते हुए विवेकनिष्ठा को संभालते हुए उसे मनपर अंकित करते हुए समय समय पर जान हथेली पर लेकर शोषक, गुंडे ठगाने वाले समाज कंटकों का पर्दाफाश करते हुए अंधश्रद्धा रखनेवाले भोले भक्तों का शोषण रोकने के लिए, जगह-जगह पर पहुँचनेवाले, विवेकवाहिनी, विवेकजागर, युवासल्लागार, खोजभूत की बोध मनका, जातिअंतका आंदोलन, इस प्रकारके विविध उपक्रमों के द्वारा शिक्षक-विद्यार्थी-महिला- कर्मचारी ऐसे समाज घटकों में विवेक-निर्भयतानीति को मन पर अंकित करते हुए २० वर्ष लगातार श्रम करनेवाले अनगिनत निरिच्छ सत्शील, संयमी कार्यकर्ता आज महाराष्ट्रभर हैं. ये युवा कार्यकर्ता डॉक्टरसाहब के नेतृत्व में निरलसतासे काम करते थे, करते हैं और करते रहेंगे.

निशस्त्र, संयमी, नियम से चलनेवालें, ६८ वर्ष के मनुष्य को, जो सुबह फिरते समय निर्घृण अमानुषतासे पीछे से गोलियाँ, मारना इसमें किंचितमात्र भी बहादूरी नहीं. इस प्रकार खून करते हैं मतिभ्रष्ठ, धर्मभ्रष्ठ, अमानुष वृत्ति के अपराधी जिन्हें ना समझमें आया मनुष्य, ना समझ में आया भगवान, ना संस्कृति, ना धर्म, ना अध्यात्म. यह ईश्वर का न्याय कहनेवालों को ईश्वर यह

इतना कुटिल प्लॅन बनायेगा तो कैसे ? इस प्रकार का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता. धर्म तथा ईश्वर के संदर्भ की गलतफहमियाँ, उसके नाम से होनेवाले शोषक कर्मकांड, बली विधि, अघोरि कृत्य, बलियों का शारीरिक - मानसिक कष्ट, लैंगिक शोषण, हत्या इसे रोकने के लिए कार्य करनेवाला, ईश्वरका लडका होगा इस में तो कोई शक नहीं. फिर ईश्वर इस कर्म का फल इस प्रकार का देगा इसका संदेह इन विद्वान साधकों को कैसे नहीं होता ? या संस्कृति के संभ्रम के समय में अनिस के विरोध करने अपने अपने दिमाग का इस्तेमाल करने का थोडा भी निश्चय किया है ? जिस विधायक के सभी ११ कलम कहीं पर भी धर्म-हिंदु धर्म अथवा दूसरे किसी भी विषयपर बोलते नहीं, उसमें पूजा को, प्रार्थनाको, तीर्थयात्राको (वारी), जुलूस को, उत्सवको, जपजाप को, मंत्र को किसीप्रकार की रोक नहीं, मंदिर अथवा ट्रस्ट को किसी प्रकार का विरोध नहीं. विरोध है तो वह सिर्फ भगवान के नामपर पीडितों की शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक, संस्कृति, लैंगिक धोखा, लगातार कष्ट और शोषण करनेवालों को उसमें है केवल धोखा, घाव, दहशत अयोग्य मार्गदर्शन / सख्ती, अविवेकी कृत्यों को प्रोत्साहन, मानवी अधिकारों की उपेक्षा और इस प्रकार के अनेक मानवी क्रूर कृत्यों का विरोध, मनुष्य का भावनिक शारीरिक, लैंगिक शोषण ना हो इसलिए कानून की सुरक्षा उस व्यक्ति को प्राप्त हो और इस प्रकार के कृत्य करनेवाले अपराधियों को सजा मिले, इस विधेयक में यही है तो फिर इतना झूठा प्रचार किसलिए ?

आज डॉक्टरसाहब के समाजकार्य की विरासत को स्थान-स्थान पर समर्थतासे चलानेवाले कार्यकर्ता महाराष्ट्रभर हैं. समाज को साथ लेकर प्रबोधन और संघर्ष दोनों का संतुलन रखते हुए यह कार्य आगे चलता रहेगा. अत्याधिक समृद्धि ऐसा उत्तराधिकारी हमें प्राप्त हुआ है. चार्वाक, लोकायत, गौतम बुद्ध, महावीराचार्य, सांख्य, कणाद आदि के विचार महाराष्ट्र की संत महात्माओं की परंपरा महात्मा फुले - शाहू महाराज, आगरकर, विठ्ठल रामजी शिंदे, डॉ.बाबासाहब आंबेडकर विवेकपूर्ण समाजनिर्मितिका महानकार्य, साने गुरुजी का मानवता धर्म, स्व.सावरकर, प्रबोधनकार इनका प्रखर वैज्ञानिक विचार हमारे पास है. अन्याय, शोषण अत्याचार समर्थतासे प्रतिकार करनेकी ताकत समाज में ही उपलब्ध है.

हम संभलेंगे और खतरनाक शोषण पर नियंत्रण भी रखेंगे इसे निश्चित ही समझ हो. आप सब को साथ लिए हम सभी कार्यकर्ता आगे की यात्रा करते रहेंगे. आपका साथ, समय-समय पर मार्गदर्शन अपेक्षित है. हमारे दुःखदायक प्रसंग में हमें सांत्वना देने आप साथ में हैं. इसलिए हम महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निमूर्लन सामिती के सभी कार्यकर्ता आपके कृतज्ञ हैं.

डॉ.प्रदीप पाटकर, **अनुवाद-डॉ.विजया वारद-रागा**
उपाध्यक्ष, बीदर रोड, उदगीर
महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिती

समाचार भारती -३

अंबाजोगाई, जि.बीड (महा.) में आन्तर भारती की शाखा स्थापित

दि. २४ दिसम्बर साने गुरुजी जयंति के दिन आंतर भारती की स्थापना कर निम्न प्रकार पदाधिकारी चुने गए.
अध्यक्ष : श्री गणपत व्यास, उपाध्यक्ष : सुश्री प्रतिभा देशमुख, सचिव : श्री दत्ता वालेकर, कोषाध्यक्ष : श्री खाजा नाझीमोद्दीन, मार्गदर्शक : श्री अमर हबीब. इस अवसर पर आंतर भारती ट्रस्ट के विश्वस्त कोषाध्यक्ष श्री अमर हबीब ने मार्गदर्शनपर भाषण दिया.
बैठक में -१) प्रति वर्ष २ अक्टूबर को सफाई कार्यक्रम करना तय हुआ.
२) अंबाजोगाई में रहनेवाले पर प्रांतीय, इतर भाषा भाषी मित्रों का बहुभाषी सम्मेलन करने का भी निश्चय हुआ.
इस कार्य में श्री एस.बी.सय्यद व श्री अभिजीत जोंधळे ऐसे व्यक्तियों की जानकारी एकत्रित करेंगे.

समाचार भारती -४

संयुक्त राष्ट्र संघ : सामाजिक विकास आयोग सम्मेलन

(आम आदमी का) सशक्तिकरण, सामाजिक बदलाव का माध्यम

संयुक्त राष्ट्रसंघ के तत्वावधान में 'सामाजिक विकास आयोग' (UN : Commission on Social Development) गठित है. इस आयोग की अध्यक्षा है सुश्री सेवा लामसल अधिकारी. वे नेपाल के संयुक्त राष्ट्रसंघ स्थायी प्रतिनिधि मंडल की चार्ज द अफेअर्स हैं.
६-१५ फरवरी २०१३ के दरम्यान कमिशन का ५१ वाँ अधिवेशन न्यूयार्क में सम्पन्न हुआ. बहाई अंतर्राष्ट्रीय समुदाय (BIC) ने इस अवसर पर अपने कार्य का परिचय देनेवाला दस्तावेज पेश किया. (BIC) का यह प्रतिवेदन इस वर्ष उसके द्वारा कमिशन के प्रति जो योगदान प्रदान किया गया उसीमें से है और इसकी प्राथमिकता में से एक विषय है ''आम जनों का सशक्तीकरण,'' जब गरीबी, सामाजिक एकीकरण, पूर्ण तथा सुरुचिपूर्ण रोजगार का प्रश्न उठता है. सामाजिक असमानताओं को दूर करने के लिए प्रेरणा, एक प्रश्नातीत सदाशपूर्ण बात है. सामाजिक विकास के संदर्भ में जो प्रमुख विषय आते हैं उसमें उपरोक्त विषय ने एक प्रमुख स्थान प्राप्त कर लिया है.
उपरोक्त प्रतिवेदन से कुछ अंश -
एक शीर्षक
''सामाजिक बदलाव के लिए (आम जन का) सशक्तिकरण एक क्रियाविधि के रूप में ।''
''सबलीकरण की ओर बढ़ने के रास्तों के विषय में गहरा विचार मंथन आवश्यक है. सार्वभौमिक सहयोग के रूप में इसे लेना होगा न कि इस रूप में कि जिनके पास कुछ संचित है वे वंचितों की ओरकुछ उछाल दें. इस तरह की एकांतिक बात को त्यागने का एक ही रास्ता है, पूरी मानवता को एक सामाजिक अवयवी समझना होगा.''
ऐसी संकल्पना में कुछ बातें (शुरू में) अस्पष्ट होती हैं. जैसे संपूर्ण और उसके हिस्सों की आन्तरिक निर्भरता, सहयोग की अपरिहार्यता, आपसी मदद और आदान-प्रदान, भूमिकाओं की अलग-अलग पहचान लेकिन साथ ही उनके बीच सामंजस्य, संस्थागत व्यवस्था की आवश्यकता ताकि दमन के स्थान पर

सक्षमता पैदा हो. साथ ही सामुदायिक उद्देश्य का अस्तित्व. इस उद्देश्य का स्थान ऊपर होना चाहिए.''

७ फवरी को BIC ने इस विषय पर एक पॅनेल चर्चा आयोजित की थी. पॅनल सदस्यों में कमिशन अध्यक्षा माननीया अधिकारी भी थी. उन्होंने अपने भाषण में कहा, ''यह सशक्तिकरण दिन-ब-दिन वृद्धिंगत हो रहा है. इसे संयुक्त राष्ट्र अनुभव कर रहा है और यह सामाजिक बदलाव के संदर्भ में महत्वपूर्ण बात है. आम जन को सशक्त बनाना यह सामाजिक विकास की जड है. यह एक अब सारगर्भ घटकों में से एक बनता जा रहा है जो सामाजिक विकास पर वैश्विक सम्मेलन के केन्द्रीभूत घटकों के तीन लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक हो रहा है. ये घटक है. गरीबी निर्मूलन, सभी को पूर्ण और उत्पादक रोजगार और काम का सुरुचिपूर्ण स्वरूप तथा सामाजिक एकात्मता. इस तरह सबलीकरण यह सामाजिक विकास का एक माध्यम है.

बहाई अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के संयुक्त राष्ट्र संघ में प्रतिनिधि मिंग ही चोंग ने इस बात की ओर ध्यान दिलाया कि यह कोई आकास्मिक घटना नहीं है कि यह विषय सामाजिक विकास की चर्चा में मध्यस्थान पर पहुँच गया है. श्री चोंग ने कहा, ''यह विकास यात्रा में प्राकृतिक उत्क्रांति है. आजुबाजु की दुनिया में क्या हो रहा है ? व्यक्तिगत तौर पर और सामुहिक तौर पर हम कौन हैं ? हमारी क्षमता कितनी है ? एक मानव जाति के रूप में विकसित होती चेतना इस रूप में प्रतिबिंबित हो रही है.''

फरवरी के ही एक अन्य सत्र में, जिसका शीर्षक था ''सशक्तिकरण किसका?'' किन माध्यमों से ? किस उद्देश्य से ?'' अन्य वक्ताओं ने भी हिस्सा लिया इनमें रोजा कॉर्नफेल्ड मॅट्टे, डायरेक्टर बुजुर्गो के लिए राष्ट्रीय सेवा चीली, कॉरीनी वुड्स, डायरेक्टर मिलेनियम अभियान, संयुक्त राष्ट्रसंघ के अर्थशास्त्र और सामाजिक मामलों के विभाग से यावो नागओरन आदि थे.

''कृति द्वारा सीख''

एक अन्य पॅनल चर्चा को BIC ने ८ फरवरी को प्रायोजित किया था. उसका शीर्षक था ''कृति में सबलीकरण'' इसमें बहाई गुट से प्रेरणा प्राप्त संघटनाओं के जमीनी स्तर पर विकास कार्य करनेवाले कार्यकर्ताओं ने अपने कार्यों से परिचित कराया.

अनुसंधान, विकास और शिक्षा से संबंधित कांबोडियन संगठन (CORDE) के

कार्यकारी संचालक हाऊ सोफियप के कथनानुसार उनके संगठन ने ''कृति द्वारा सीखा'' नीति चुनी है. इसका उद्देश्य है युवकों में क्षमता का निर्माण ताकि वे अपने समाज की अधिक अच्छी सेवा कर सके.

CORDE उत्तर पश्चिम कांबोडिया के ३००० से अधिक युवाओं को 'सहायक शिक्षा कार्यक्रम' प्रदान करता है. अन्य बातों में वह चाहता है कि उसके विद्यार्थी उनके अपने घरेलू समाज की सेवा की प्रत्यक्ष कृति में व्यस्त रहें. यह किताबी कार्य से अतिरिक्त काम होगा. हर चीज में पढाई और कृति दोनों घटक होंगे.'' हाऊ सोफियप ने कहा.

बहाई द्वारा प्रेरणाप्रदत्त अभिकरण (Agency) के कार्यक्रम-समन्वयक है ज्यडिथ-थेरेसे-एलिजिओ-मार्टिनेझ. यह अभिकरण होंडूरस का बायन असोसिएशन है. उनके अनुसवार भी इस संगठन के कार्य का सारभाग सेवा ही है. फिलहाल यह कार्यक्रम हायस्कूल आयु के ६००० विद्यार्थियों तक पहुँचा है जो होंडुरस के १८ प्रभागों में से १२ में फैले हैं.

''व्यक्ति की क्षमता पर विश्वास के नींव पर यह आधारित है. क्षमता है अपने आप निर्णय लेने की और समाज-विकास के तीन महत्वपूर्ण क्षेत्रों की क्षमता विकसित करने में सहायता करने की. ये क्षेत्र हैं व्यक्तिगत, सामुहिक और संस्थागत.'' मार्टिनेझ ने स्पष्ट किया.

बहाई के प्रेरणा से कोलंबिया में निर्मित FUNDACE संगठन है. जो परिवर्णिशब्द SAT द्वारा जाना जाता है. "Sistema de Aprendizajez Tutorial ज्ञात है स्पॅनिश में. यह कार्यक्रम सामुदायिक स्तर पर मार्गदर्शन करनेवाले व्यक्तियों को प्रशिक्षित करता है और उनमें समन्वय स्थापि करता है. ये मार्गदर्शक ग्रामीण क्षेत्रों के लिए उपयुक्त हायस्कूल स्तर की शिक्षा प्रदान करते हैं.

''हमें ऐसा लगता है SAT यह एक शिक्षित होने का सृजनात्मक मार्ग है लेकिन उसकी मध्यवर्ति कल्पना'' ''मानवता की सेवा'' और जहां तक हो सके स्थानीय स्तर पर. ''दुनिया को जीने के लिए एक अधिक अच्छी जगह बनाना है'' मार्टिनेझ ने यह भी कहा कि, ''हमें ऐसा लगता है कि इस मार्ग से हम सामाजिक सशक्तिकरण में योगदान दे रहे हैं''

(One Country March 2013) से साभार

हिन्दी प्रस्तुति-ज्योतिराव लढके,

चेतस २२, बाजीप्रभु नगर, नागपुर-४४००३३.